www.researchvidyapith.com ISSN (Online): 3048-7331

Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

*** Vol-2* *Issue-3* *March 2025***

भागलपुर जिला (बिहार) में भूमि उपयोग एवं कार्यरत श्रमिकों का कृषि पर प्रभावः एक भौगोलिक अध्ययन

प्रशांत कुमार

शोध छात्र, एम. ए., यू. जी. सी.–नेट, स्नातकोत्तर भूगोल विभाग, तिलका माँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर

डॉ. प्रशांत कुमार

सहायक प्राध्यापक, स्नातकोत्तर भूगोल विभाग, तिलका माँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर

शोध सार

वर्तमान अध्ययन भागलपुर जिला में भूमि उपयोग एवं कार्यरत श्रमिकों का कृषि पर प्रभाव पर केंद्रित है। कृषि उत्पादकों में मुख्य उत्पादन कारक भूमि और श्रम हैं। भागलपुर जिले में कुल जनसंख्या का 52.44 प्रतिशत कार्यशील जनसंख्या है, जो भारत और बिहार की तुलना में अधिक है। देश में कृषि क्षेत्र हो या गैर–कृषि क्षेत्र, दोनों में कार्यरत श्रमिकों (जनसंख्या) की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है और भूमि पर जनसंख्या का दवाब बढ़ता जा रहा है। ऐसी स्थिति में उचित और उत्पादक भूमि उपयोग (कृषि और गैर–कृषि क्षेत्र में) और कार्यरत श्रमिकों का उचित उपयोग आवश्यक हो गया है। भागलपुर जिले के प्रशासनिक विभाजन में भागलपुर प्रमंडल एवं तीन अनुमंडल शामिल हैं। भागलपुर, कहलगांव, और नौगछिया। इस जिले में कुल 16 प्रखंड, 242 पंचायत और 1535 राजस्व ग्राम हैं। ग्रामीण जनसंख्या 80.17ः और नगरीय जनसंख्या 19.83ः है, जबकि दशकीय वृद्धि 25.4 प्रतिशत (2011) है। जिले की साक्षरता दर 63.1ः है। भागलपुर जिले की जनसंख्या की व्यवसायिक संरचना पिछड़ी अर्थव्यवस्था का द्योतक है, जिसमें उद्योग, व्यापार, परिवहन और अन्य तृतीयक सेवाओं का महत्व अत्यंत न्यून है। यहां के गरीब कृषक और कृषि श्रमिक अन्य रोजगार की तलाश में दूसरे जिलों और दूसरे राज्यों में पलायन कर रहे हैं। इस अध्ययन में आँकड़ा विश्लेषण एवं तालिका निर्माण के लिए Excel Sheet का प्रयोग किया गया है। इसके लिए द्वितीयक स्रोतों से आंकड़े एकत्रित किए गए हैं, और व्यक्तिगत सर्वेक्षण के अनुभवों के आधार पर भागलपुर जिले में भूमि उपयोग एवं कार्यरत श्रमिकों का अध्ययन किया गया है, ताकि नियोजित भूमि उपयोग के जरिए क्षेत्र का ग्रामीण विकास संभव हो सके। जो कृषि और गैर–कृषि क्षेत्रों में भूमि उपयोग एवं कार्यरत श्रमिकों का कृषि पर प्रभाव अध्ययन को एक नई दिशा प्रदान करता है।

मुख्य शब्द– भूमि उपयोग, कार्यरत श्रमिक, कृषि, दशकीय वृद्धि, व्यवसायिक संरचना।

भूमिका

भूमि और श्रम अन्य संसाधनों के साथ मिलकर किसी वस्तु का उत्पादन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसलिए अन्य आर्थिक साधनों के साथ–साथ प्राकृतिक और मानवीय संसाधनों का सही अनुपात भी आवश्यक है। यदि किसी देश में प्राकृतिक संसाधन उपलब्ध हैं, लेकिन मानवीय संसाधन (जनसंख्या) सीमित हैं, तो वहाँ प्राकृतिक संसाधनों (भूमि) का पूरा उपयोग नहीं किया जा सकता। भारत एक गर्म आर्द्र जलवायु वाला देश होने के कारण यहां 15–17 आयु वर्ग उत्पादक एवं आर्थिक कार्य सम्पन्न करने वाली जनसंख्या को कार्यरत जनसंख्या माना जाता है। भारतीय जनसंख्या का अधिकांश भाग कृषि क्षेत्र अर्थात् प्राथमिक क्षेत्र में लगा हुआ

है। यद्यपि द्वितीय और तृतीयक क्षेत्र में वृद्धि हो रही है जो विकास का लक्षण है किन्तु यह वृद्धि संतोषजनक नहीं है। वर्ष 2011 की जनगणना के आँकड़ों के अनुसार भारत में कुल श्रमिक (कार्यरत जनसंख्या) का 68.8 प्रतिशत कृषि व उससे सम्बन्धित व्यवसाय में 13.5 प्रतिशत खनन व निर्माण उद्योग में व शेष 17.7 प्रतिशत सेवाओं (जैसे– परिवहन, संचार, व्यापर, वाणिज्य व अन्य सेवाओं आदि) में लगा हुआ है। भारतवर्ष की ही भांति बिहार में भी व्यावसायिक संरचना का स्वरूप अर्थात् कार्यरत जनसंख्या का वितरण निरूपित होता है परन्तु सम्पूर्ण भारत की तुलना में बिहार में द्वितीय और तृतीयक क्षेत्रों में परिवर्तन तेजी से हुआ है, क्योंकि अनेक भागों में औद्योगिकीकरण व तेजी से अन्य राज्यों में पलायन हुआ है। भारत एवं बिहार की तरह भागलपुर जिला भी कृषि प्रधान क्षेत्र हैं। यहां का प्रमुख व्यवसाय कृषि है, जिसमें काश्तकार 19.88 प्रतिशत तथा खेतिहर मजदूर के रूप में 48.22 प्रतिशत श्रमिक लगे हैं, गृह उद्योगों में 7.06 प्रतिशत तथा शेष अन्य कार्यों में 26.42 प्रतिशत कार्यरत श्रम संलग्न है। इस प्रकार जिले की जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना पिछड़ी अर्थव्यवस्था का द्योतक है। जिसमें उद्योग, व्यापार, परिवहन तथा अन्य तृतीयक सेवाओं का महत्व अति न्यून है। कृषि मजदूरों की अधिकता और उसमें भी महिलाओं की प्रधानता, निर्धनता भारत, बिहार व भागलपुर जिले में कार्यरत तथा अकार्यरत जनसंख्या का तुलनात्मक विवरण निम्न प्रकार है।

तालिका 1.0 : भूमि उपयोग एवं कार्यरत श्रमिक का कृषि पर समानुपात (प्रतिशत में)

वर्ष	भारत		बिहार		भागलपुर	
	कार्यरत जनसंख्या	गैर कार्यरत जनसंख्या	कार्यरत जनसंख्या	गैर कार्यरत जनसंख्या	कार्यरत जनसंख्या	गैर कार्यरत जनसंख्या
2001	39.1	61.9	29.27	70.73	32.38	67.62
2011	39.79	60.21	33.43	66.57	29.23	70.77

स्त्रोत : जिला जनगणना पुस्तिका भागलपुर, 2001 एव 2011 जनगणनाओं पर आधारित

तालिका 1.0 में भारत, बिहार व भागलपुर जिले के कार्यरत श्रम अनुपात को दिखाया गया है। तालिका से स्पष्ट है कि वर्ष 2001 में भारत एवं बिहार में कार्यरत श्रमिकों का प्रतिशत क्रमषः 39.1 प्रतिशत एवं 29.92 प्रतिशत था जो वर्ष 2011 में बढ़कर क्रमशः 39.79 एवं 33.43 प्रतिशत हो गया। इस प्रकार स्पष्ट है कि भारत एवं बिहार में वर्ष 1981 में बिहार में कार्यरत श्रम का प्रतिशत बढ़ा हुआ, जिसका मुख्य कारण जन्म दर में अधिकता रही, जिसके कारण 0–15 वर्ष तक के लोगों में अधिक वृद्धि हुई। परिणामस्वरूप विकास अपेक्षित गति से प्राप्त नहीं हो सका। बिहार वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार राज्यों में कार्यरत श्रमिकों के प्रतिशत के अनुसार चौथे क्रम पर रहा। कार्यरत एवं गैर कार्यरत जनसंख्या का अनुपात व्यापारिक एवं आर्थिक संरचना की एक ऐसी प्रवृति प्रस्तुत करता है जिससे स्पष्ट होता है कि देश में उत्पादक कम, उपभोक्ता वर्ग अधिक है। जिससे पूंजी निर्माण एवं बचत कम होगी और इसका प्रभाव विकास पर बाधा के रूप में निरूपित हो रहा है। तालिका से स्पष्ट है कि बिहार की तुलना में भागलपुर जिले में कार्यरत जनसंख्या अधिक है लेकिन राष्ट्रीय स्तर से कम है। जिले में वर्ष 2001 की तुलना में 2011 में कार्यरत जनसंख्या का प्रतिशत कम हुआ है। वर्ष 2001 में जिले की कार्यरत जनसंख्या 32.38 प्रतिशत था जो वर्ष 2011 में घटकर 35.56 प्रतिशत हो गयी। इसका कारण कृषि क्षेत्र का कम होना है। जिसके कारण यहां के गरीब कृषक एवं कृषि श्रमिक अन्य रोजगार की तलाश में दूसरे जिलों एवं दूसरे राज्यों में पलायन कर रहे हैं।

दूसरी ओर, जहाँ जनसंख्या अधिक है लेकिन प्राकृतिक संसाधन (भूमि) सीमित हैं, वहाँ भूमि पर जनसंख्या का दबाव बढ़ता है। ऐसे में जनसंख्या के अनुपात में भूमि का सही उपयोग करना आवश्यक हो जाता है। इसी दृष्टिकोण से भूमि उपयोग एवं कार्यरत श्रमिकों का कृषि पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र

भागलपुर जिला बिहार के पूर्वी हिस्से में एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक और आर्थिक केंद्र है। यह जिला गंगा नदी के दक्षिणी किनारे पर स्थित है, जो इसे उपजाऊ बनाती है। यह शहर 2569 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैला हुआ है। यह 25^0 7' से 25० 30श उत्तरी अक्षांश और $86^0$37' ls 87^0 30' पूर्व देशांतर के बीच स्थित है। भागलपुर जिला बिहार के मुंगेर, खगड़िया, मधेपुरा, पूर्णिया, कटिहार और बांका जिलों के साथ–साथ झारखंड के गोड्डा और साहिबगंज जिलों से घिरा हुआ है। भागलपुर प्रमंडल का प्रमंडलीय मुख्यालय और भागलपुर जिले का जिला मुख्यालय है। भागलपुर जिले के प्रशासनिक विभाजन में भागलपुर प्रमंडल एवं तीन अनुमंडल शामिल हैं। भागलपुर, कहलगांव, और नौगछिया। इस जिले में कुल 16 प्रखंड, 242 पंचायत और 1535 राजस्व ग्राम हैं।

ग्रामीण जनसंख्या 24,35,234 और नगरीय जनसंख्या 6,02,532 है, जबकि दशकीय वृद्धि 25.4ः (2011) है। लिंगानुपात 1000 पुरुषों पर 880 स्त्रियां हैं। जिले की साक्षरता दर 63.1 प्रतिशत है।

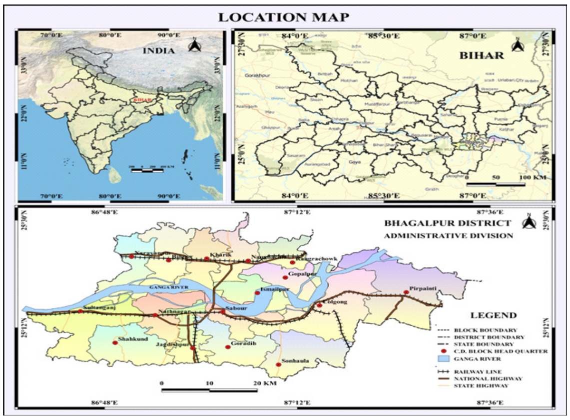

चित्र संख्या–1 भागलपुर जिले की अवस्थिति

अध्ययन के उद्देश्य

किसी भी शोध अध्ययन के लिए निर्धारित उद्देश्य आवश्यक होते हैं जो प्रभावी होते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र के प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार हैं–

1. कार्यरत श्रमिकों में लिंग और कृषि बनाम कृषीत्तर सेक्टर के बीच उसकी असमानता पर लक्ष्य के साथ प्रवृत्तियों का विश्लेषण कर सकेंगे।
2. 2001–2011 की अवधि में कृषि श्रमिकों/कामगारों में प्रवृत्तियों का विश्लेषण करना
3. जिले के कृषि भूमि उपयोग में कार्यरत श्रमिकों की भूमिका का विश्लेषण करना।
4. जिले में कृषि भूमि उपयोग एवं कार्यरत श्रमिकों का कृषि को प्रभावित करने वाले स्थानीय कारकों का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत शोध अध्ययन कार्य को समन्न करने के लिए निम्न परिकल्पना को आधार बनाया गया है।

1. जनांकिकीय वृद्धि का सर्वाधिक भार भूमि उपयोग एवं कृषि क्षेत्र को प्रभावित करता है।
2. कृषि विकास एवं कृषि विस्तार के लिए कार्यरत श्रमिकों नियोजन बहुत आवश्यक है।

साहित्य समीक्षा–

जनसंख्या भूगोल में किए गए शोध विषयक अध्ययनों के विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि जनसंख्या वृद्धि और नगरीकरण पर कई विद्वानों ने शोध और अनुसंधान कार्य किया है। अब तक जनसंख्या भूगोल में जनसंख्या वृद्धि और नगरीकरण शीर्षक पर कई साहित्य पढ़ने को मिले हैं। इनमें एच.एल. सिंह और बबीता सिंह (2009), आर.पी. चान्दना, बाला (1986), दुबे (1990), मुखर्जी ए.बी. (1988), शर्मा (1991), सिंह यू. (1960), लाल परमानन्द (1962), टिरुडेल (1942), है गेट (1975) आदि विद्वानों के कार्य प्रशंसनीय हैं। गोसल और चान्दना ने 1969–72 के बीच किए गए शोधों का लेखा–जोखा प्रस्तुत करते हुए हाल की जनगणना के आकार पर सम्पूर्ण भारत के जनसंख्या वितरण का अध्ययन करने पर बल दिया। भारत में जनसंख्या भूगोल का ढांचा सर्वप्रथम गोसल (1956) ने अपने डॉक्टरेट थीसिस में प्रस्तुत किया, जिसे उन्होंने त्रिवार्था के मार्गदर्शन में पूरा किया था। गोसल ने पंजाब विश्वविद्यालय में अपने मार्गदर्शन में भारत में जनसंख्या भूगोल की नींव रखी और बीसवीं सदी के छठे दशक के प्रारंभिक वर्षों में अपने मार्गदर्शन में शीघ्र कार्य करवाया (कृष्ण 1968, चान्दना 1970, मेहता 1971)। सिंह, एच.एल., और सिंह बबीता (2009) ने प्रतापगढ़ जिले में जनसंख्या वृद्धि प्रारूप का अध्ययन किया है। इन्होंने उपयुक्त आंकड़ों का विश्लेषण कर जनसंख्या वृद्धि को दर्शाया है तथा जनसंख्या से उत्पन्न समस्याओं के बारे में अध्ययन किया है। प्रो. पूरण मल ने (2010) नीमकाथाना तहसील में बढ़ती जनसंख्या एवं पेयजल समस्याओं, चुनौतियों एवं निवारण पर शोध पत्र प्रस्तुत किया है। इसमें इन्होंने वर्षा की कमी तथा बढ़ती जनसंख्या के विशेष संदर्भ में वर्तमान पेयजल समस्याओं और उनके समाधान हेतु चलाई जा रही विभिन्न सरकारी योजनाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया है।

शोधविधि एवं आँकड़ों के स्रोत

इस अध्ययन में आँकड़ा विश्लेषण एवं तालिका निर्माण के लिए म्गबमस का प्रयोग किया गया है। इस शोध पत्र की पूर्णता और शुद्धता के लिए प्राप्त आँकड़ों को तालिका में प्रस्तुत किया गया है, जिसमें प्रतिशत मान भी शामिल है। इसमें वर्ष 2001 और वर्ष 2011 के बीच के अंतराल की गणना की गई है, और इनके परिणामों के अध्ययन को क्रमबद्ध किया गया है। इस शोध पत्र के अध्ययन के लिए द्वितीय आँकड़ों का उपयोग किया गया है, जो द्वितीयक स्रोतों से लिए गए हैं और सरकारी संस्थाओं द्वारा संकलित किए गए हैं। ये स्रोत निम्नलिखित हैं—

1. भारतीय जनगणना 2011 जनगणना कार्य निदेशालय, बिहार
2. जिला सांख्यिकी कार्यालय भागलपुर
3. जिला जनगणना प्रतिवेदन 2001 और 2011
4. बिहार कृषि विश्वविद्यालय सबौर, भागलपुर
5. सांख्यिकी एवं मूल्यांकन निदेशालय, बिहार, पटना

भूमि उपयोग

भूमि उपयोग कृषि उत्पादकों में सबसे महत्वपूर्ण उत्पादन कारक है। भूमि प्रकृति का एक निःशुल्क उपहार है। जिस देश (क्षेत्र) में प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता होती है, वे आर्थिक दृष्टि से समृद्ध होते हैं। इसके विपरीत, प्राकृतिक संसाधनों की कमी वाले देश (क्षेत्र) आसानी से आर्थिक समृद्धि हासिल नहीं कर सकते। देश के सभी प्राथमिक उद्योग उत्पादन के लिए मुख्यतः भूमि पर निर्भर होते हैं, और निर्मित उद्योग के लिए भी आवश्यक कच्चा माल भूमि से ही प्राप्त होता है। सामान्यतः भूमि उपयोग की दृष्टि से भूमि का वर्गीकरण मुख्य रूप से दो श्रेणियों में किया जाता हैः—

1. गैर—कृषि क्षेत्र और
2. कृषि क्षेत्र

1. गैर कृषि क्षेत्र

गैर कृषि क्षेत्र वह क्षेत्र है जहाँ कृषि के अलावा अन्य उद्देश्यों के लिए भूमि का उपयोग किया जा सकता है, जैसे कि वन और वनोपज पर आधारित उद्योग, आवासीय, औद्योगिक और वाणिज्यिक उपयोग, मनोरंजन और जलाशयों (जैसे नदियाँ, नहरें, तालाब, कुएँ आदि) में भूमि का उपयोग, चारागाह भूमि, बंजर भूमि (जैसे रेगिस्तान, पहाड़, टीले), कृषि योग्य बेकार भूमि, और परती भूमि। शहरीकरण की बढ़ती प्रवृत्तियों के कारण आवासीय, औद्योगिक, वाणिज्यिक और यातायात में भूमि का उपयोग लगातार बढ़ रहा है। दूसरी ओर, जंगलों की कटाई, सिंचाई के साधनों की कमी, भूमि कटाव, और किसानों की कमजोर आर्थिक स्थिति भी परती भूमि में वृद्धि का कारण बन रही हैं। इन सभी कारकों का कृषि क्षेत्र पर गहरा प्रभाव पड़ता है। शहरीकरण की प्रवृत्ति में वृद्धि, परती भूमि में वृद्धि, औद्योगिक क्षेत्र में वृद्धि, यातायात के साधनों में वृद्धि के साथ ही साथ तेजी से बढ़ती जनसंख्या ने कृषि क्षेत्र पर दबाव डाला है।

2. कृषि क्षेत्र

कृषि क्षेत्र वह भूमि है जो केवल कृषि के लिए उपयोग में लाई जाती है। कुल भौगोलिक क्षेत्र से गैर—कृषिगत क्षेत्र को घटाने पर जो शेष क्षेत्र बचता है, उसे शुद्ध कृषिगत क्षेत्र (छमज ब्तवचचमक ।तमं) कहा जाता है। शुद्ध कृषि क्षेत्र में एक वर्ष में एक बार से अधिक कृषि किए जाने वाले क्षेत्र को शामिल करने पर प्राप्त भूमि का क्षेत्र सकल कृषि क्षेत्र (ळतवेे ब्तवचचमक ।तमं) कहलाता है। भागलपुर जिले में कुल भौगोलिक क्षेत्र 2569 वर्ग किलोमीटर है, जिसमें शुद्ध कृषि क्षेत्र 43.49 प्रतिशत है और शेष गैर—कृषिगत क्षेत्र 56.51 प्रतिशत है, जो जिले का शुद्ध कृषित क्षेत्र है। सकल कृषित क्षेत्र का 82.4 प्रतिशत है और एक बार से अधिक बोये जाने वाला क्षेत्र अर्थात् द्विफसली क्षेत्र 17.6 प्रतिशत है।

कार्यरत श्रम

उत्पादन का दूसरा प्रमुख कारक श्रम है। श्रम से तात्पर्य शारीरिक तथा मानसिक दोनों प्रकार के श्रम से है जो धन प्राप्त करने के लिये किया जाता है। वर्तमान विश्व के अधिकांश देशों में जहाँ प्राथमिक कार्यों में लगे

लोगों का प्रतिशत घट रहा है, वहीं द्वितीयक या तृतीयक कार्यों में लगे लोगों का प्रतिशत बढ़ रहा है। जे.बी. क्लार्क महोदय का मानना है कि तृतीयक कार्यों में हुई असंतुलित वृद्धि को अक्सर जनांकिकीय दबाव का प्रतीक माना जाता है। श्रम कारक का पूर्ति करने वाला मनुष्य श्रमिक कहलाता है। इस प्रकार कार्यशील व्यक्ति के अन्तर्गत वह व्यवित आता है जो आर्थिक रूप से उत्पादन कार्य में संलग्न हो. इस प्रकार संलग्नता एवं सहभागिता शारीरिक या मानसिक किसी तरह की हो सकती है। इसके अन्तर्गत वास्तविक कार्य ही नहीं वरन् प्रभावशाली पर्यवेक्षण तथा दिशा निर्देशन जैसा कार्य भी शामिल है। भारत में विभिन्न व्यवसायों में लगे लोगों को श्रमजीवी कहा जाता है। बच्चे, विद्यार्थी, बुजुर्ग और बीमार लोगों को छोड़कर बाकी सभी लोग श्रमजीवी वर्ग में आते हैं। इसका मतलब यह है कि भारत के युवा और वयस्क लोग ही श्रमजीवी या श्रमिक माने जाते हैं। श्रमिकों को तीन वर्गों में बांटा गया है। भागलपुर जिले में कुल जनसंख्या का 52.44 प्रतिशत जनसंख्या कार्यरत जनसंख्या है।

कार्यरत श्रम की श्रेणी–

श्रम के आधार पर कार्यरत श्रम को तीन श्रेणी में रखा गया है–

1. मुख्य श्रमिक
2. सीमान्त श्रमिक
3. अश्रमिक वर्ग

1. मुख्य श्रमिक

जिन श्रमिकों ने पूरे वर्ष में कम से कम 183 दिन कार्यरत में आर्थिक क्रियाकलापों में कार्य किया हो, मुख्य श्रमिक कहा गया है।

2. सीमान्त श्रमिक

जिन श्रमिकों ने 180 दिन या उससे अधिक एवं 183 दिन से कम समय तक आर्थिक क्रियाकलापो में कार्य किया हो, सीमान्त श्रमिक कहा गया है।

3. अश्रमिक वर्ग

परिभाषित वर्षों के दौरान जिन व्यक्तियों ने आर्थिक क्रियाकलापों में कोई कार्य न किया हो उन्हें अश्रमिक या गैर श्रमिक वर्ग में रखा गया है।

तालिका 1.1 भागलपुर जिले में प्रखंडवार कार्यरत श्रम श्रेणी पुरुष–महिला वर्ष 2011 की स्थिति (प्रतिशत में)

प्रखण्ड का नाम	श्रमिक	पुरुष	महिला	कुल मुख्य श्रमिक	पुरुष श्रमिक	महिला श्रमिक	कुल मुख्य श्रमिक	पुरुष मुख्य श्रमिक	महिला मुख्य श्रमिक
नारायणपुर	32636 3.31	25378 3.42	7258 2.98	18674 3.49	16054 3.55	2620 3.17	5377 5.79	4931 5.97	446 4.40
बिहपुर	34620 3.51	29518 3.98	5102 2.09	20190 3.77	18019 3.99	2171 2.63	5404 5.82	5118 6.19	286 2.82
खरीक	42473 4.31	32099 4.33	10385 4.26	19405 3.63	16863 3.73	2542 3.07	3967 4.27	3658 4.42	309 3.09
नवगछिया	48006 4.88	36914 4.98	11092 4.55	31534 5.90	25443 4.69	6091 7.37	6843 7.38	5992 7.25	851 8.39
रंगराचौक	27446 2.79	21394 2.89	6052 2.48	14334 2.68	13317 2.94	1017 1.23	5410 5.83	5127 6.20	283 2.89
गोपालपुर	31593 3.21	23347 3.15	8246 3.38	13603 2.54	11372 2.51	2231 0.27	3720 5.83	3391 4.10	329 3.24
पीरपैंती	101084 11.27	71242 9.62	29842 12.25	47169 8.83	38739 8.58	8380 10.15	10777 11.62	9553 11.56	1224 12.07
कहलगांव	110875 11.27	89072 12.03	21803 8.95	62956 11.78	55808 12.35	7148 8.65	12693 13.68	11718 14.18	975 9.62
इस्माईलपुर	15293 1.55	10587 1.43	4706 1.93	8659 1.62	7005 1.55	1654 2.00	3113 3.35	2492 3.01	621 6.12
सबौर	39215 3.98	33098 4.47	6117 2.51	25852 4.84	22759 5.03	3093 3.74	3863 4.16	3497 4.23	366 3.61
नाथनगर	47561 4.83	36499 4.93	11062 4.54	27438 5.13	23622 5.23	3816 4.62	5817 6.27	5168 6.25	649 6.40
सुलतानगंज	81525 8.28	58177 7.86	23348 9.58	37752 7.06	30558 6.76	7149 8.71	5398 5.82	4559 5.52	839 8.27
शाहकुंड	69355 7.05	47651 6.43	21704 8.91	30620 5.73	2437 5.39	6273 7.59	5008 5.40	4339 5.25	669 6.60
गोराडीह	50748 5.12	35948 4.85	14800 6.07	22315 4.17	18502 4.09	3813 4.61	5425 5.85	4705 5.69	720 7.10
जगदीशपुर	172994 17.53	140384 18.96	32110 13.18	127740 23.91	110027 24.36	17713 21.45	4832 5.21	4206 5.09	626 6.17
सन्हौला	78604 7.99	48758 6.58	29846 12.25	25888 4.84	19103 4.23	6785 8.22	5073 5.47	4131 5.00	942 9.29
कुल योग	983528	740056	243472	531429	451588	82541	92720	82585	10135

स्त्रोतः जिला जनगणना पुस्तिका भागलपुर, 2011 जनगणनाओं पर आधारित

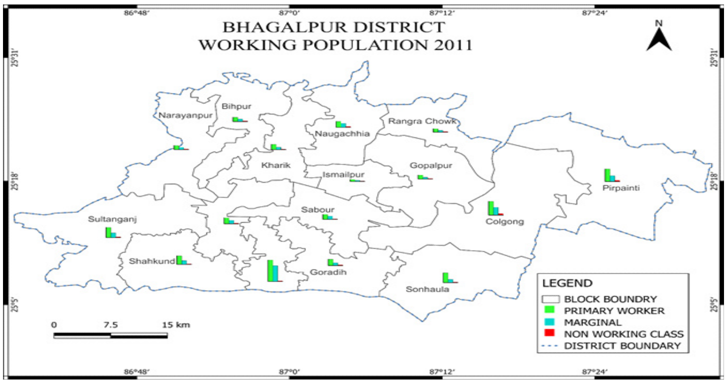

चित्र संख्या–2

कृषक (काश्तकार या खेतिहर)

कृषक और मजदूर के प्रतिशत का स्वरूप किसी क्षेत्र में भूमि वितरण के स्वरूप को दर्शाता है। इसके साथ ही, कुल कार्यरत जनसंख्या में कृषकों का प्रतिशत भूमि उपयोग के स्वरूप और ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास की दिशा को भी निर्धारित करता है। कृषक जनसंख्या की अधिकता वर्तमान भारतीय परिस्थितियों में कृषि वैविध्य और गत्यात्मकता को बाधित और कुण्ठित करती है। इस प्रकार, यह ग्रामीण जीवन के पिछड़ेपन और कृषि के निर्वाहक स्वरूप को बनाए रखने के लिए आधार प्रदान करता है। अध्ययन क्षेत्र में कुल श्रमिक 933,528 हैं, जिनमें पुरुष श्रमिक 740,056 और महिला श्रमिक 243,472 हैं। जिले में सबसे अधिक श्रमिक जगदीशपुर (17.53:) और सबसे कम श्रमिक इस्माईलपुर (1.55:) प्रखंड में हैं। जगदीशपुर में मुख्य श्रमिकों की अधिकता का कारण यह है कि यह जिला मुख्यालय के प्रभाव क्षेत्र में आता है, जिससे यहाँ श्रमिकों को अधिक काम मिल जाता है। वहीं, इस्माईलपुर प्रखंड में मुख्य श्रमिकों की कमी का कारण कार्य के अवसरों की कमी है।

जिले में मुख्य श्रमिकों की संख्या 5,34,129 है, जिसमें पुरुष श्रमिक 4,51,588 और महिला श्रमिक 82,541 हैं। इन श्रमिकों को समय पर रोजगार मिल जाता है। जिले के सीमांत श्रमिकों की संख्या 4,49,399 है, जिसमें पुरुषों की संख्या 2,88,468 और महिलाओं की संख्या 60,931 की संख्या है। इसके साथ ही अकार्यरत श्रमिकों (छवद ॅवतामते) की संख्या 20,54,238 है, जिसमें पुरुषों की संख्या 8,75,607 और महिलाओं की संख्या 11,78,631 है।

तालिका 1.2 : कार्यरत श्रम श्रेणी पुरुष–महिला वर्ष 2011 की स्थिति में कार्यरत श्रमिक की स्थिति (प्रतिशत में)

क्र.सं	कार्यरत श्रम श्रेणी	कार्यरत श्रमिक संख्या वर्ष 2011 की स्थिति में	प्रतिशत
1	मुख्य श्रमिक	534129	17.58
	पुरुष	451588	27.95
	महिला	82541	5.8
2	सीमान्त श्रमिक	449399	14.79
	पुरुष	288468	17.85
	महिला	160931	11.32
3	अश्रमिक वर्ग	2054238	67.62
	पुरुष	875607	54.19
	महिला	1178631	82.88

स्त्रोतः जिला जनगणना पुस्तिका भागलपुर, 2011 जनगणनाओं पर आधारित

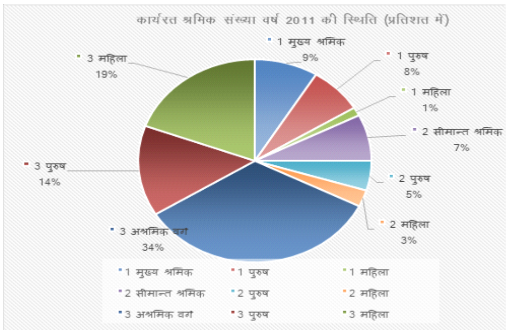

चित्र संख्या–3

कार्यरत जनसंख्या का विभाजन

वर्ष 2011 की जनगणना में श्रमिकों को या कार्यशील जनसंख्या को चार वर्गों में रखा गया है।

(1) कृषक–

प्रत्यक्ष रूप से कृषि कार्य करने वाला व्यक्ति कृषक है। चाहे वह भूमि पर नियोक्त हो या स्वयं कार्य करता हो किन्तु जिस व्यक्ति ने मुद्रा अर्जन के लिये अपनी भूमि अन्य व्यक्ति को दे दी है तथा जो स्वयं कृषि का निरीक्षण न करता हो वह कृषक की श्रेणी में नहीं रखा जायेगा। इसी प्रकार दूसरों की भूमि पर मजदूरी या अन्य प्रकार के पारेश्रमिक क लिये काम करने वाले व्यक्ति भी कृषक नहीं कहलायेंगे।

(2) कृषि श्रमिक–

कृषि श्रमिकों की परिभाषा में बहुत विभिन्नता है साधारण शब्दों में कृषि श्रमिकों का तात्पर्य उन श्रमिकों से है जो अपना श्रम कृषि फार्म पर कार्यों के बदले नकद या वस्तु के रूप में मजदूरी प्राप्त करके विक्रय करते है। प्रथम कृषि श्रम जाँच समिति (1950–51) के अनुसार ने श्रमिक, ''जो वर्ष में कुल कार्यरत अवधि के आधे से अधिक समय कृषि व्यवसाय (फसल उत्पादन मत्रा) में श्रम करके रोजगार प्राप्त करते हैं, कृषि श्रमिक कहलाते हैं।'' इसके अन्तर्गत कृषि से संबंधित अन्य व्यवसाय जैसे पशुपालन, दुध उद्योग, कुक्कुट पालन, बागवानी, कृषि उत्पादन और अन्य कृषि संबंधी आदि कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है और अक्सर ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करते हैं। किन्तु द्वितीय कृषि श्रमिक जाँच समिति (1956–57) के अनुसार ''फसल उत्पादन के अतिरिक्त अन्य कृषि कार्यों जैसे पशु पालन, दुध उद्योग, बागवानी, कुक्कुट पालन में कार्य करने वाले श्रमिकों की कृषि श्रमिकों की श्रेणी में सम्मिलित किया गया हो''। जनगणना आयोग 1961 के अनुसार ''कृषि श्रमिक वे है जो दूसरों के फार्म पर कार्य करते है और कार्य के लिये नकद या वस्तु के रूप में, मजदूरी प्राप्त करते है, श्रमिकों को फार्म पर उत्पादन, प्रबंध, संचालन आदि के निर्णय लेने के अधिकार नहीं होते और न ही उन्हें उस भूमि को जिस पर वे कार्य करते है, बन्धक रखने, विक्रय करने या पट्टे पर देने का अधिकार होता है। श्रमिक भूमि से प्राप्त लाभ अथवा हानि के लिये भी जिम्मेदार नहीं होते, श्रमिकों को कृषि श्रमिकों की श्रेणी में आने के लिये उस मौसम या पिछले मौसम में कृषि श्रमिक के रूप में कार्य करना आवश्यक होता है।

(3) पारिवारिक उद्योग (घरेलू उद्योग)–

वे उद्योग जो लघु पैमाने पर ग्रामीण क्षेत्रों में परिवार के मुखिया द्वारा घर की सीमाओं में ही प्रारम्भ या क्रियान्वित किये जाते है। पारिवारिक या घरेलू उद्योग कहलाते हैं। गृह उद्योग उत्पादन, प्रोसेसिंग, सर्विसिंग, मरम्मत तथा बिक्री से संबंधित होते है किन्तु इसके अन्तर्गत अधिवक्ता, चिकित्सक, नाई, धोबी जैसे सम्बन्धित व्यवसाय सम्मिलित नहीं है।

(4) अन्य श्रमिक–

वे श्रमिक जो कृषक या कृषि श्रमिक अथवा घरेलू उद्योग में नहीं आते किन्तु विगत एक वर्ष से किसी न किसी कार्य में संलग्न है अन्य श्रमिक कहलाते हैं। कार्यरत श्रमिकों के उक्त विभाजन के आधार पर अध्ययन क्षेत्र भागलपुर जिले के अन्तर्गत कार्यशील श्रमिकों को सामान्य रूप से निम्न वर्गों, यथा कृषक, कृषि श्रमिक, परिवारिक श्रमिक, और अन्य श्रमिक में विभाजन किया गया है। जिसे तालिका 1.2 में दिखाया गया है।

तालिका संख्या 1.2: जिले में कार्यरत श्रमिक का विभाजन, वर्ष 2001–2011 (प्रतिशत में)

कार्यरत श्रम विभाजन	2001	2011	प्रतिशत परिवर्तन
कृषक	15.31	13.74	–1.57
कृषि श्रमिक	52.26	48.32	–3.94
परिवारिक श्रमिक	5.11	5.32	0.21
अन्य श्रमिक	27.32	31.79	4.47

स्त्रोतः जिला जनगणना पुस्तिका भागलपुर, 2001 और 2011

तालिका 1.2 में वर्ष 2001 एवं 2011 की जनगणना के अनुसार कार्यरत श्रमिकों के विभाजन को दिखाया गया है। तालिका से स्पष्ट है कि वर्ष 2001 में कृषकों का प्रतिशत 15.31 था, जबकि वर्ष 2011 में घटकर यह 13.74 प्रतिशत हो गया। इस प्रकार वर्ष 2001 की तुलना में 2011 में 1.57 प्रतिशत कृषकों में कमी आयी। इसी प्रकार कृषि श्रमिकों का प्रतिशत भी वर्ष 2011 में 2001 की तुलना में कम हुआ है। इस प्रकार 2001 की तुलना में वर्ष 2011 में 3.94 प्रतिशत कृषि श्रमिकों में कमी आयी। इससे स्पष्ट है कि वर्ष 2001 से 2011 तक कृषक एवं कृषि श्रमिक दोनों ही प्रकार के कार्यरत श्रमिक कम हुए हैं। इसका मुख्य कारण भागलपुर का जिल से अन्य राज्यों में काम की खोज में पलायन होना है। जिसके परिणामस्वरूप कृषि क्षेत्र में पिछडता मजदूरों की कमी महसूस की जा रही है। भागलपुर जिले में वाणिज्य, व्यापार, परिवहन, संचार, शिक्षा व स्वास्थ्य सेवायें, बँकिंग, बोमा तथा शासकीय व अशासकीय सेवाओं में वृद्धि हुई। परिणामस्वरूप अन्य कार्यों में श्रमिकों के प्रतिशत में तेजी से वृद्धि हुई। तालिका से स्पष्ट है कि वर्ष 2001 में अन्य तालिका 1.3 में कार्यरत श्रम विभाजन के पुरुष–महिला अनुपात के तुलनात्मक विश्लेषण को वर्ष 2001 व 2011 में प्रतिशत परिवर्तन के रूप में दिखाया गया है।

तालिका 1.3: जिले में कार्यरत श्रमिक विभाजन वर्ष 2001एवं 2011 के संदर्भ में (पुरुष–महिला प्रतिशत में)

कार्यरत श्रम विभाजन	2001		2011		प्रतिशत परिवर्तन	
	पुरुष	महिला	पुरुष	महिला	पुरुष	महिला
कृषक	15.31	9.37	14.97	10.01	–0.34	–0.64
कृषि श्रमिक	47.24	58.18	45.63	56.48	–1.61	1.3
परिवारिक श्रमिक	6.11	10.24	4.94	9.83	–1.17	–0.41
अन्य कार्य	31.34	22.21	34.46	23.68	3.12	1.47

स्त्रोत : जिला जनगणना पुस्तिका भागलपुर, 2001 और 2011

तालिका से स्पष्ट है कि वर्ष 2001 में पुरुष कृषक की संख्या 2011 की तुलना में अधिक थी अर्थात् वर्ष 2011 में पुरुष कृषक की संख्या में 0.34 प्रतिशत की कमी आय, जबकि महिला कृषक संख्या में 1.34 प्रतिशत की वृद्धि हुई। दूसरी ओर पुरूष कृषक श्रमिक (खेतिहर मजदूर) में वर्ष 2001 की तुलना में 2011 में 0.44 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जबकि महिला कृषि श्रमिकों में 0.61 प्रतिशत की कमी आयी। पारिवारिक उद्योग के अन्तर्गत वर्ष 2011 में 2001 की तुलना में पुरुष व महिला दोनों ही कार्यरत श्रमिक में कमी आयी यह कमी पुरूषों में 1.17 प्रतिशत और महिलाओं में 0.41 प्रतिशत थी। लेकिन अन्य कार्य के अन्तर्गत पुरूषों एवं महिलाओं का प्रतिशत 2001 की तुलना में 2011 में बढ़ा है। पुरुषों में 3.12 प्रतिशत एवं महिलाओं में 1.47 प्रतिशत की वृद्धि हुई। इस प्रकार महिलाओं की तुलना में पुरुषों में यह वृद्धि अधिक है। कृषक श्रमिक (पुरूष व महिलायें), कृषक पुरूष श्रमिक एवं पारिवारिक उद्योग मे महिला व पुरुष दोनों ही कार्यरत श्रमिक की कमी का परिणाम यह रहा कि वर्ष 2011 में कुल गैरकार्यरत जनसंख्या के पुरूष व महिला श्रमिक दोनों ही के प्रतिशत में वृद्धि हुई।

तालिका 1.4: भूमि उपयोग में संलग्न कार्यरत श्रमिक वर्ष 2001, 2011 (प्रतिशत में)

कार्यरत श्रम विभाजन	कृषि क्षेत्र में कार्यरत श्रम	गैर कृषि क्षेत्र में कार्यरत श्रम
2001	92.79	88.21
2011	111.36	112.47

स्त्रोतः जिला जनगणना पुस्तिका भागलपुर, 2001 एव 2011 जनगणनाओं पर आधारित

तालिका 1.4 में कृषि एवं गैर कृषि क्षेत्र के अन्तर्गत कार्यरत श्रम अनुपात को दिखाया गया है। तालिका से स्पष्ट है कि वर्ष 2001 में कार्यरत श्रम अनुपात का प्रतिशत 92.97 था जो बढ़कर 2011 में 111.36 प्रतिशत हो गया, इस प्रकार 2001 से 2011 तक में 18.57 प्रतिशत की वृद्धि कृषि क्षेत्र के कार्यरत श्रमिकों में आयी। इसी प्रकार गैर कृषि क्षेत्र में 2001 में कार्यरत श्रमिकों का प्रतिशत 88.21 था जो बढ़कर वर्ष 2011 में 112.47 प्रतिशत हो गया। इस प्रकार 2001 से 2011 की अवधि में 24.06 प्रतिशत कार्यरत श्रमिकों एवं भूमि उपयोग अनुपात में वृद्धि हुई। वर्ष 2001 एवं 2011 के विश्लेषण से स्पष्ट है कि चाहे कृषि क्षेत्र हो या गैर कृषि क्षेत्र दोनों में कार्यरत श्रमिकों (जनसंख्या) की संख्या में निरन्तर वृद्धि होती जा रही है तथा भूमि पर जनसंख्या का भार बढ़ता जा रहा है। ऐसी स्थिति में उचित एवं उत्पादकतापूर्ण भूमि उपयोग (कृषि व गैर कृषि क्षेत्र में) एवं कार्यरत श्रम का उचित विदोहन आवश्यक हो गया है।

तालिका 1.5: प्रति श्रमिक भूमि उपयोग, वर्ष 2001 एवं 2011(हेक्टर में)

कार्यरत श्रमिक विभाजन	कृषि क्षेत्र में	गैर कृषि क्षेत्र में
2001	0.37	0.43
2011	0.32	0.39

स्त्रोतः जिला जनगणना पुस्तिका भागलपुर, 2001 एव 2011 जनगणनाओं पर आधारित

उपरोक्त तालिका 1.5 में एक श्रमिक के द्वारा उपयोग में लायी जा रही भूमि की मात्रा को दर्शाया गया है। तालिका से स्पष्ट है कि वर्ष 2001 में कृषि क्षेत्र में प्रति श्रमिक भूमि उपयोग 0.37 हेक्टर थी जो वर्ष 2011 में 0.32 हेक्टर रह गयी। इस प्रकार वर्ष 2001 से 2011 तक के वर्षों में 0.05 हेक्टर भूमि प्रति श्रमिक कम हो गयी। इसी प्रकार गैर कृषि क्षेत्र में वर्ष 2001 में 0.43 प्रतिशत भूमि व 2011 में 0.39 प्रतिशत भूमि प्रति श्रमिक थी अर्थात् 2001 की तुलना में 2011 में 0.04 प्रतिशत गैर कृषि भूमि प्रति श्रमिक कम हो गयी। इससे स्पष्ट होता हैं कि बढ़ती कार्यरत जनसंख्या के साथ भूमि उपयोग की मात्रा घटती जा रही है अर्थात् प्रति श्रमिक भूमि उपलब्धि कम होती जा रही है।

भूमि उपयोग एवं कार्यरत श्रमिकों का कृषि पर प्रभाव–

सामान्यतः भूमि उपयोग व्यावसायिक संरचना का भौतिक स्वरूप है। इस संरचना में प्राथमिक क्षेत्र जैसे कृषि व कृषि से सम्बन्धित व्यवसाय, द्वितीयक क्षेत्र जैसे लघु व कुटीर तथा विनिर्माणी उद्योग, तृतीयक क्षेत्र जैसे वाणिज्य, व्यापार, परिवहन, संचार, शिक्षा व स्वास्थ्य सेवायें, बैंकिंग व बीमा तथा शासकीय व अशासकीय सेवाओं में लगी भूमि उपयोग का बड़ा महत्व हैं। इन कृषि एवं गैर कृषि क्षेत्रों में भूमि उपयोग एवं कार्यरत श्रमिकों का कृषि पर प्रभाव अध्ययन को एक नयी दिशा प्रदान करता है। भागलपुर जिले के भूमि उपयोग एवं कार्यरत श्रमिक के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि इस जिले में भूमि उपयोग व कार्यरत श्रमिक का कृषि पर प्रभाव काफी असन्तुलन है। जिसके कारण यहां की कार्यरत जनसंख्या में छिपी (गुप्त) बेरोजगारी तथा अगतिशीलता विद्यमान है। इस जिले में कुल कार्यरत जनसंख्या का 70.34 प्रतिशत भाग प्राथमिक क्षेत्र में लगा हुआ है। जबकि प्राथमिक क्षेत्र में इतनी मात्रा में जनसंख्या का उपयोग आवश्यक नहीं है क्योंकि प्रत्यक्ष रूप से तो दिखाई देता है कि सभी को रोजगार प्राप्त हैं, कोई बेरोजगार नहीं हैं किन्तु वास्तविकता यह है कि अधिकांश व्यक्तिकृषि में लगे हैं किन्तु वहां उन्हें रोजगार प्राप्त नहीं है। अर्थात छिपी या गुप्त बेरोजगारी प्राथमिक क्षेत्र में बड़ी मात्रा में विद्यमान है। यदि उन्हें कृषि उत्पादन से हटा दिया जाये तो भी उत्पादन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। अर्थात् इस क्षेत्र में बड़ी मात्रा में मानव शक्ति बेकार हो रही है। जिसका अन्य क्षेत्रों में उपयोग कर उत्पादकता में वृद्धि की जा सकती है और इन्हें वास्तविक रोजगार भी दिया जा सकता है। यद्यपि भागलपुर जिले में उद्योगों का विकास प्रारम्भ हुआ है किन्तु उनकी गति बहुत ही धीमी है। तृतीयक क्षेत्र में भी आशातीत विकास नहीं हआ। अतः यह जिला बहुत पिछड़ा हुआ है। यहां क्षेत्रीय असन्तुलन विद्यमान है। अतः सभी क्षेत्रों का सन्तुलित विकास किया जाना अनिवार्य है। द्वितीयक क्षेत्र लगभग स्थिर बना हुआ है जबकि इस क्षेत्र में विकास की सम्भावनायें विद्यमान है। यदि असन्तुलन को दूर करना है तो द्वितीयक एवं तृतीयक क्षेत्र के विकास को गति देना अनिवार्य होगा, तभी प्राथमिक क्षेत्र से श्रम शक्ति को द्वितीयक एवं तृतीयक क्षेत्र में लाकर उसका सही उपयोग किया जा सकता है और कृषि से जनसंख्या का दबाब भी कम किया जा सकता है।

भागलपुर जिला में कृषि की प्रधानता है। यहां कृषि एवं कृषि मजदूर के रूप में लगभग 48.32 प्रतिशत कुल

कार्यरत जनसंख्या लगी हुई है और इसमें भी कृषि क्षेत्र एवं कृषि मजदूर के रूप में पुरुषों की तुलना में महिलाओं की अधिकता है, जो पिछड़ी एवं निर्धनतापूर्ण व्यावसायिक संरचना का द्योतक है। साथ ही अशिक्षा, गरीबी एवं अकुशलता के कारण इनमें गतिशीलता का अभाव है जिसके कारण इस क्षेत्र का विकास कम हो रहा है। साथ ही अनुत्पादक उपभोक्ता वर्ग का भार भी निरन्तर बढ़ता जा रहा है, जिससे लोग पहले से ही निर्धन एवं गरीब है, उनकी निर्धनता और भी बढ़ती जा रही है। अतः इन असन्तुलनों को दूर करके ही इस क्षेत्र में विकास की गति को प्राप्त किया जा सकता है, जिसके लिये कृषि पर जनसंख्या के दबाव को कम करना होगा एवं कृषि क्षेत्र में वर्तमान ज्ञात विधियों का व्यापक प्रयोग करना होगा तथा लघु एवं कुटीर उद्योगों के प्रोत्साहन के साथ–साथ तृतीयक क्षेत्र की ओर ध्यान देना होगा। यद्यपि इस क्षेत्र में 2001 की तुलना में 2011 में कृषि श्रमिकों का सापेक्षिक महत्व कम हुआ है और अन्य व्यवसायों का सापेक्षिक महत्व थोड़ा बढ़ा है जो स्वागतयोग्य प्रवृति है। लेकिन विकास में क्षेत्रीय असन्तुलन की प्रवृति स्पष्ट हो रही है जिसे विकास के वास्तविक लाभ करने की दृष्टि से दूर करना आवश्यक होगा।

निष्कर्ष

भागलपुर जिले के भूमि उपयोग एवं कार्यरत श्रमिक का कृषि पर प्रभाव के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि इस जिले में भूमि उपयोग व कार्यरत श्रमिकों का प्रभाव कृषि क्षेत्र पर काफी असन्तुलन है। जिसके कारण यहां की कार्यरत जनसंख्या में छिपी (गुप्त) बेरोजगारी तथा अगतिशीलता विद्यमान है। इस जिले में कुल कार्यरत जनसंख्या का 70.34 प्रतिशत भाग प्राथमिक क्षेत्र में लगा हुआ है। जबकि प्राथमिक क्षेत्र में इतनी मात्रा में जनसंख्या का उपयोग आवश्यक नहीं है क्योंकि प्रत्यक्ष रूप से तो दिखाई देता है कि सभी को रोजगार प्राप्त हैं, कोई बेकार नहीं हैं किन्तु वास्तविकता यह है कि अधिकांश व्यक्ति यद्यपि कृषि में लगे हैं किन्तु वहां उन्हें रोजगार प्राप्त नहीं है। अर्थात् छिपी या गुप्त बेरोजगारी प्राथमिक क्षेत्र में बड़ी मात्रा में विद्यमान है। यदि उन्हें कृषि उत्पादन से हटा दिया जाये तो भी उत्पादन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। अर्थात् इस क्षेत्र में बड़ी मात्रा में मानव शक्ति बेकार हो रही है। जिसका अन्य क्षेत्रों में उपयोग कर उत्पादकता में वृद्धि की जा सकती है और इन्हें वास्तविक रोजगार भी दिया जा सकता है। जिससे समाज/देश के विकास में सहायता मिलेगी।

संदर्भ सूची–

1. अग्रवाल, डॉ० एन.एल. (1993): भारतीय कृषि का अर्थतन्त्र, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, पृ०सं० 26–27, 119.
2. सेक्सेना एस. सी. (1996): श्रम समस्याएँ एवं सामाजिक सुरक्षा, रस्तोगी पब्लिकेशन्स, शिवाजी रोड मेरठ
3. दामाहिया एवं कुमा (2004): कृषि विकास की समस्याऐं मित्तल पब्लिकेशन, नई दिल्ली पृ०. 113–32
4. गुलाटी, (2005): व्यापार उदारीकरण और भारतीय कृषि, ऑक्सफोर्ड पब्लिकेशन, नई दिल्ली
5. मौर्य, एस.डी. (2007): जनसंख्या भूगोल, शारदा पुस्तक भवन,इलाहाबाद, पृ०सं० 327–330
6. भल्ला, (2008): इंडियन एग्रीकल्चर सिंस इंडिपेंडेंस, दीप एण्ड दीप पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 213–218
7. कुमार पूणोन्दु (2009): बिहार विस्तृत अध्ययन, अरिहन्त पब्लिकेशन्स (इन्डिया) प्रा. लि. मेरठ 250002.
8. मिश्र एस. के. एवं पुरी वी. के. (2009): भारतीय अर्थव्यवस्था, हिमालय पब्लिशिंग हाऊस, दरियागंज, नईदिल्ली।
9. यादव सुन्दरलाल (2009): मजदूरी नीति और सामाजिक सुरक्षा, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर
10. सिंह, रामदयाल (2010): भागलपुर एक ऐतिहासिक, भौगोलिक, आर्थिक एवं सामाजिक स्वरूप, गीता प्रेस, भागलपुर
11. सिंह करतार (2010): ग्रामीण विकासः नीतियाँ और प्रबंधन, ऋषि बुक्स, संस्करण।
12. अहमद इमत्याज एवं अहसन कमर (2011): बिहार एक परिचय नेशनल पब्लिकेशन, खजाँची रोड पटना।
13. सेसंस आफ इण्डिया–(2011): बिहार, सीरीज 11, भाग XII B. जनगणना पुस्तक, भागलपुर, पृ०सं० 14–40.
14. कुमारी, श्वेता (2013): मानव विकास सूचकांक एवं आर्थिक विकास एक अध्ययन (नवगछिया प्रखंड के

संदर्भ में), पी.–एच.डी. शोध–प्रबंध (अप्रकाशित), तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर

15. तिवारी आर.सी. एवं सिंह बी.एन. (2014)ः "कृषि भूगोल" प्रवालिका पब्लिकेशन, प्रयागराज।
16. हुसैन, माजिद, (2014)ः "कृषि भूगोल" रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
17. कुमार, प्रशांत एवं सिंह, उषा, (2017)ः मुंगेर जिला (द. बिहार) में ग्रामीण विकासः एक भौगोलिक अध्ययन, पी.–एच.डी. शोध–प्रबंध (अप्रकाशित), भूगोल विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, पृ. 118–22
18. डब्लयू. एफ. आगर्बन टेक्नोलॉजो एण्ड सोशल चेन्ज, पृ०सं० 3–10
19. बिहार की अर्थव्यवस्था अरिहन्त पब्लिकेशन्स पृ०सं०–8

Cite this Article-

'अवनीश कुमार; डॉ0 दिनेश माण्डोत, 'कबीर के दर्शन पर प्रारंभिक सूफी विचारधारा का प्रभाव', Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal (RVIMJ), ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:2, Issue:03, March 2025.

Journal URL- https://www.researchvidyapith.com/
DOI- 10.70650/rvimj.2025v2i3002
Published Date- 03 March 2025